गोपालदासजीकृत

श्रीवल्लभाख्यानको

व्रजभाषामे

व्याख्यान

तथा व्रजभाषामे उत्सवनिर्णय

ओर

श्रीनाथजी प्रभृति कितनेक भगवत्स्वरूपनके

गुजराती भाषामे धोल

तथा

श्रीगंगाजीको ओर श्रीयमुनाजीको

संस्कृत कीर्तन

यह सब

गोस्वामिश्रीजीवनजीमहाराजकृतग्रंथ

गट्टूलालाजी नामसुप्रसिद्ध

पंचनदि गोवर्धन लालाजीकृत टिप्पणसहित

मुंबईमे

“न्याशनल” छापखानामे छापिके

प्रसिद्ध कियेहे

संवत् १९२८ शाके १७२३

॥ अथउत्सवनिर्णयः प्रारभ्यते ॥

श्रीबालकृष्णोजयति ॥ श्रीबालकृष्णपत्कंजंमानसस्थंसुखप्रदं ॥ प्रणम्यतत्प्रेरणयाग्रंथोऽयंक्रियतेमया ॥ १॥ दोहा वल्लभनंदन पदयुगल बंदन करि सुखदान॥ निजमारगनिरनय निरखि लिखिहूं ताहिप्रमान॥ अथ प्रथम श्रीमहाप्रभुननें श्रीभागवततत्वदीपनिबंधकेविषें एकादश्युपवासादिकर्तव्यंवेधवर्जितं या कारिकाविषें एकादशीसूं निर्णयको क्रम लियोहे तेसें ॥ अब हू एकादशीसूं आरंभ करिकें निर्णय लिखतहूं **॥ अथ एकादशीनिर्णयः ॥** दशमी जो पचपन ५५

---

१ अब गोस्वामिश्रीजीवनजीमहाराजनें दैवीजीवनपें कृपा करिकें स्वमार्गीयउत्सवनको निर्णय व्रजभाषामें कियोहे क्यों जो अनेकवैष्णव भगवत्सेवाके आग्रही हें ओर संस्कृतग्रंथनको ज्ञान विनकूं नाहि ओर स्वमार्गीयसंस्कृतग्रंथ देखिकें यथार्थ निर्णय कहिवेवारे हु आजकाल सर्वत्र मिलें नाहि कहींक ही होंय तासूं भाषाके ग्रंथविना विनसबवैष्णवनकूं उत्सवनको ज्ञान होयसके नहि ओर उत्सवनके ज्ञानविना सेवा सर्वथा बनिसके नहि ओर ग्रंथनसूं विरुद्धउत्सव मानेजांय तो प्रभुनको बडो ही अपराध पडे तासूं यह अपराध दूर करिवेकूं ओर सेवा सांग करवायकें अज्ञजीवनकूं हू परमफलप्राप्ति करवायवेकूं गोस्वामिश्रीजीवनजीमहाराजनें यह भाषामें उत्सवनको निर्णय कियोहे या ग्रंथकी टिप्पणी श्रीजीवनजीमहाराजकी आज्ञासूं घनश्यामभट्टसुत गट्टूलाला या नामसूं प्रसिद्ध पंचनदिगोवर्द्धनलालानें कीनीहे अब श्रीजीवनजीमहाराज या उत्सवनिर्णयमें विघ्ननिवारण करिवेकूं एकश्लोकतें मंगलाचरण करतहें ता श्लोकको अर्थ अपुने ठाकुरजी श्रीबालकृष्णजीके चरणरूपकमलकूं प्रणाम करिकें अंतःकरणमें विनकी प्रेरणातें यह ग्रंथ में करतहूं अब चरणकूं कमल कह्यो याको अभिप्राय यह जो जेसें कमल कोमल होतहे ताप हरतहे शीतलता करतहे तेसें चरणारविंद हू कोमल हे संसारताप हरिकें शीतलता करतहे ओर यह चरणारविंद केसो हे मानस जो भक्तनको मन तामें रहतहे जेसें कमल हू मानस जो मानससरोवर तामें रहे ओर चरणारविंद सुखप्रद हे सो अगणितानंद देवेवारो हे जसें कमल हू सुगंधादिकतें आनंद देतहे.

घडी होय तो वा एकादशीको त्याग करनो ओर पलमात्र हू जो पचपन घडीमे ओछी होय तो वह एकादशी न छोडनि एसें श्रीकल्याणरायजीनें हू आपनें एकादशीको निर्णय कियोहे तामें लिख्योहे ओर जो ज्योतिषी पास न होय ओर वेधको संदेह मनमे रेहेतो होय तो शुद्धद्वादशीके दिन व्रत करनो एसो वाक्य हे ओर दो एकादशी होय तो दुसरीएकादशीके दिन व्रत करनो ओर दो द्वादशी होय तो शुद्धएकादशी होय तो हू पेहेली द्वादशीके दिन व्रत करनो ॥ १ ॥ **अथजन्माष्टमीनिर्णयः ॥** भाद्रपद वदि अष्टमी जन्माष्टमी ॥ सो वह अष्टमी सप्तमीविद्धा न लेनी सप्तमीको वेध सूर्योदयसूं लेनो एकादशीकिसीनाईं पचपन ५५ घडिको वेध न लेनो ओर अष्टमी जो सप्तमीविद्धा होय तो औदयिकअष्टमीके दिन उत्सव माननो ओर अष्टमीको क्षय होय तो हु शुद्धनवमीके दिन उत्सव माननो ओर दो अष्टमी होंय तो पेहेली अष्टमीके दिन उत्सव माननो ॥ २ ॥ **अथराधाष्टमीनिर्णयः ॥** भाद्रपद शुदि अष्टमी राधाष्टमी ॥ सो अष्टमी उदयात लेनी ओर दो अष्टमी होंय तो पेहेली अष्टमीके दिन उत्सव माननो ओर अष्टमीको क्षय होय तो विद्धाअष्टमीकेही दिन उत्सव माननो ॥ ३ ॥ **अथ दानएकादशीनिर्णयः ॥** भाद्रपद शुदि एकादशी दानएकादशी ॥ सो जा दिन व्रत करनो तादिन दानको उत्सव माननो व्रतको प्रकार तो प्रथम एकादशीनिर्णयमें लिख्योहे ओर यह उत्सव कितनेक औदयिक एकादशीके दिन करतहें ओर एकादशीको क्षय होय तो विद्धाएकादशीके दिन ही करतहें परंतु मुख्यपक्ष व्रतके दिन उत्सव करनो यह ही हे ॥ ४ ॥ **अथवामनद्वादशीनि**

र्णयः॥ भाद्रपद शुदि द्वादशी वामनद्वादशी॥ सो द्वादशीमध्यान्ह
व्यापिनी लेनी मध्यान्हको लक्षण जितनी दिनमानकी घडी होंय
तिनको बराबर मध्यभाग सो मध्यान्ह यह मुख्यपक्ष ओर जितनी
दिनमानकी घडी होंय तिनके पांच भाग करने तामे तिसरो भाग
मध्यको जितनी घडिको आवे ता कालको नाम मध्यान्ह काल
यह दूसरोपक्ष ओर एकादशीकें दिन विष्णुशृंखल योग होय तो
एकादशीके दिन उत्सव माननो विष्णुशृंखल योगको प्रकार एका
दशीमें श्रवणनक्षत्र बेठे ओर द्वादशी श्रवणनक्षत्रहीमें उपरांत आवे
ता योगको नाम विष्णुशृंखल यह योग एकादशीके दिन सूर्योदयसूं
लेकें सूर्यास्तसूं पहिलें चाहेतब आवतो होय तो एकादशीके दिन
उत्सव माननो ओर रात्रिमें यह योग आवतो होय सो उपयोगी
नहि ओर एकादशीके दिन विष्णुशृंखलयोग न होय केवल
श्रवनणक्षत्र होय ओर द्वादशीके दिन श्रवणनक्षत्र न होय तो हू
एकादशीके दिन उत्सव माननो ओर विद्धा एकादशीके दिन
श्रवणनक्षत्र होय तो वा दिन उत्सव माननो नही॥ द्वादशीके
दिन माननो ओर दोइ दिन श्रवणनक्षत्र न होय ओर द्वादशी
मध्यान्हसमयकेविषे दोइ दिन आवती होय तो एकादशीके
दिन उत्सव माननो ओर मध्यान्हसमें दोई दिन द्वादशी न आवती
होय तो हू एकादशीके दिन उत्सव माननो ओर एकादशी तथा
द्वादशी दोइ दिन श्रवणनक्षत्र आवतो होय तो द्वादशीके "दिन
उत्सव माननो ओर दो द्वादशी होय तो पेहेली द्वादशीके दिन
श्रवणनक्षत्र होय तो पेहेली द्वादशीके दिन उत्सव मानवो ओर
दूसरीद्वादशीके दिन श्रवणनक्षत्र होय तो दुसरी द्वादशीके दिन

उत्सव माननो ओर दो द्वादशीनमें श्रवणनक्षत्र होय तो जा दिन मध्यान्हसमें श्रवणनक्षत्रकी व्याप्ति होय ता दिन उत्सव माननो ओर दोइ दिन श्रवणनक्षत्र होय परंतु मध्यान्हव्याप्ति दोइ दिन नही होय तो जा दिन उदयात श्रवणनक्षत्र होय ता दिन उत्सव माननो ॥ ५ ॥ **अथनवरात्रप्रारंभनिर्णयः॥** आश्विन शुदि प्रतिपदासूं नवरात्रको आरंभ होय सो प्रतिपदा उदयात लेनी ओर दो प्रतिपदा होय तो पेहेली प्रतिपदा लेनी ओर प्रतिपदाको क्षय होय तो विद्धाप्रतिपदा लेनी ॥६॥ **अथविजयादशमीनिर्णयः॥** आश्विन शुद्ध दशमी विजयादशमी सो दशमी संध्याकालव्यापिनी लेनी सो दशमी दो प्रकारकी श्रवणयुक्त ओर श्रवणरहित तामें श्रवणरहित दशमी चारप्रकारकी पेहेले दिन संध्याकालव्यापिनी दूसरे दिन संध्याकालव्यापिनी दोइ दिन संध्याकालव्यापिनी ओर दोइ दिन संध्याकालमें न होय एसी तामें पेहेले दिन संध्याकालव्यापिनी होय तो पेहेले दिन माननी दूसरे दिन संध्याकालव्यापिनी होय तो दूसरे दिन माननी ओर दोइ दिन संध्याकालव्यापिनी होय तो पेहेले दिन माननी ओर दोइ दिन संध्याकालव्यापिनी न होय तो दूसरी दशमीके दिन माननी ॥ अब श्रवणनक्षत्रसहित विजयदशमीको प्रकार पेहेले दिन दशमी श्रवणनक्षत्रयुक्त संध्याकालव्यापिनी होय तो पेहेले दिन माननी ओर दूसरे दिन संध्याकालसमय श्रवणनक्षत्रयुक्त होय तो दूसरे दिन माननी ओर दशमीके दिन श्रवणनक्षत्र उदयात होय ओर संध्याकालविषें श्रवणनक्षत्रकी व्याप्ति आवती न होय तो हु वा हि दिन माननी ओर पेहेले दिन संध्याकालव्यापिनी दशमी न

होय ओर दूसरे दिन संध्याकालसूं पेहेलें दशमी ओर श्रवणनक्षत्र दोई समाप्त होतेहोंय तो दूसरे दिन माननी ओर सूर्योदयसमें थो डी दशमी होय ओर श्रवणनक्षत्रकी व्याप्ति संध्यासमे होय तो हु वा हि दिन माननी ॥७ ॥ **अथशारदपूर्णिमानिर्णयः ॥** आश्विन सुद पून्यो सरदपून्यो सो चंद्रोदयव्यापिनी लेनी ओर दोईदिन पून्यो चंद्रोदयव्यापिनी होय तो पेहेली लेनी ओर दोइ दिन चंद्रोदयव्यापिनी न होय तो हु पेहेली लेनी ॥८॥ **अथ धनत्रयोदशीनिर्णयः ॥** कार्तिक वदि त्रयोदशी धनत्रयोदशी ॥ सो त्रयोदशी उदयात लेनी दोत्रयोदशी होंय तो पेहेली लेनी ओर त्रयोदशीको क्षय होय तो विद्धा लेनी ॥ ९ ॥ **अथरूपचतुर्द शीनिर्णयः॥** कार्तिकवदि चतुर्दशी रूपचतुर्दशी यह चतुर्दशी चंद्रोदयव्यापिनी लेनी ओर दो दिना चंद्रोदयव्यापिनी होय तो पूर्व लेनी ओर दोई दिना चंद्रोदयसमय ॥ अथवा अरुणोदयसमय चतुर्दशी क्षयवशसूं न आवती होय तो विद्धा लेनी यद्यपि निर्भ यरामभटनें यह चतुर्दशी सूर्योदयव्यापिनी लिखीहे तथापि संव त्सरोत्सवकल्पलता उत्सवमालिका प्रभृति प्राचीनग्रंथनको तो पहिलें लिख्यो सो ही संमतहे ॥ **अथदीपोत्सवनिर्णयः ॥** कार्तिक वदि अमावस दिवारी सो अमावस प्रदोषव्यापिनी लेनी प्रदोषको लक्षण तो सूर्य अस्त होयवे लगें तबसूं सो छ घडी रात जाय ता कालको नाम प्रदोषकाल पेहेले दिन प्रदोषव्यापिनी होय तो पेहेले दिन माननी ओर दूसरे दिन प्रदोषव्यापिनी होय तो दूसरे दिन माननी ओर दोईदिन प्रदोषव्यापिनी होय तो पेहेले दिन माननी ओर दोई दिन प्रदोषव्यापिनी न होय तो हु पेहेले

दिन माननी ॥ ११ ॥ **अथअन्नकूटोत्सवनिर्णयः ॥** अन्नकूट को उत्सव दिवारीके दूसरे दिन माननो ओर वा दिन कछू अड बाडाटसूं अन्नकूट न बनिसक तो कार्तिकशुदी पूर्णिमाताई जब बने तब करनो ॥ १२ ॥ **अथभ्रातृद्वितीयानिर्णयः ॥** कार्तिक सुदि दूज भाइदूज सो दूज मध्यान्हव्यापिनी लेनी मध्यान्हको ल क्षण पेहेले बामनद्वादशीके निर्णयमे लिख्योहे ओर मध्यान्हव्या पिनी न होय तो उदयात होय ता दिन माननी ॥ १३ ॥ **अथ गोपाष्टमीनिर्णयः ॥** कार्तिक सुदि अष्टमी गोपाष्टमी सो अष्टमी उदयात लेनी दो अष्टमी होंय तो पेहेली लेनी ओर क्षय होय तो विद्धा लेनी ॥ १५ ॥ **अथ प्रबोधिनीनिर्णयः ॥** कार्तिक शुदि एकादशी प्रबोधिनीएकादशी सो जा दिन व्रत करनो ता दिन भद्रा[२]रहितसमेमें देवोत्थापन करनो व्रतको प्रकार प्रथम एकादशीके निर्णयमे लिख्योहे ॥ १५ ॥ **अथ श्रीगिरिधराणां जन्मोत्सवनिर्णयः ॥** कार्तिक शुदि द्वादशीके दिन श्रीगिरिध रजीको जन्मउत्सव सो द्वादशी उदयात लेनी ओर दो द्वादशी होंय तो पेहेली द्वादशीके दिन उत्सव माननो ओर द्वादशीको क्षय होय तो विद्धाद्वादशीके दिन उत्सव माननो ॥ १६ ॥ **अथ श्री मद्विठ्ठलनाथजन्मोत्सवनिर्णयः ॥** पौष कृष्ण नवमी श्रीगु सांइजीको जन्मोत्सव सो नवमी उदयात लेनी ओर दो नवमी

---

२ भद्रा सो विष्टि सो पंचांगमें स्फुट लिखी होयहे ओर दशमीकी समाप्तिसूं लेकें द्वादशीके आरंभताई एकादशीकी जितनी घडी सिद्ध होंय तिनमें दो विभाग करिकें दूसरो विभाग भद्रा जाननो जेसें अट्ठावन घडी एकादशी होय तो पेहेली गुनतीस घडी आछी ओर दुसरी गुनतीस घडी भद्रा जाननी.

होंय तो पेहेली नवमीके दिन उत्सव माननो ओर नवमीको क्षय होय तो विद्धानवमीके दिन उत्सव माननो ॥ १७ ॥ **अथमकरसंक्रांतिनिर्णयः ॥** मकरसंक्रांतिको पुण्यकाल संक्रांति बेठेपिछें बीसघडीताईं जाननो सो सूर्यास्तसूं पेहेले जो संक्रांति बेठे तो वा दिन पुण्यकाल जासमें आवतो होय तासमें तिलवाभोग धरने दानादिक करने ओर सूर्यास्तसूं पिछें संक्रांति बेठे तो दूसरे दिन प्रातःकालकेविषें तिलवाभोग धरने दानादिक करने ओर संक्रांतिके पेहेलेदिन भोगीको उत्सव माननो ॥ १८ ॥ **अथवसंतपंचमीनिर्णयः ॥** माघ सुदि पंचमी वसंतपंचमी सो पंचमी उदयात लेनी ओर दो पंचमी होंय तो पेहेली पंचमीके दिन उत्सव माननो क्षय होय तो विद्धापंचमीके दिन उत्सव माननो ॥ १९ ॥ ॥ **अथहोलिकादंडारोपणनिर्णयः ॥** माघ सुदि पून्यो होरी दंडारोपणपर्वात्मक उत्सव सो होरीदंडारोपण भद्रारहित कालमें करनो संध्याकालकेविषें ॥ अथवा ॥ प्रातःकालकेविषें सांझको भद्रारहित पौर्णिमा न होय तो आवतीपिछली रातकूं प्रतिपदामें दंडारोपण करनो ओर वा दिन ग्रहण होय ओर ग्रस्तोदय होय तो ग्रहण छूटेपिछें दंडारोपण करनो ओर ग्रस्तोदय न होय तो ग्रहण लगेपेहेलें दंडारोपण करनो ॥ २० ॥ **अथश्रीमद्गोवर्धनधरागमनोत्सवनिर्णयः ॥**फाल्गुन कृष्ण सप्तमी श्रीनाथजीको पाटउत्सव सो सप्तमी उदयात लेनी ओर दो सप्तमी होंय तो पेहेली सप्तमीके दिन उत्सव माननो ओर सप्तमीको क्षय होय तो विद्धासप्तमीके दिन उत्सव माननो ॥२१ ॥**अथहोलिकोद्दीपननिर्णयः ॥** फाल्गुन सुद पून्यो होलिकोत्सव सो पून्यो प्रदोषव्या

पिनी लेनी तादिन होरी भद्रा[1]रहित कालमें प्रगटनी संध्याकालके विषें सूर्यास्तसूं पीछें अथवा प्रातःकालकेविषें सूर्योदयसूं पेहेलें ओर पहिले दिन आखीरात भद्रा होय ओर दूसरे दिन सायंकालसूं पहिलें पून्यो समाप्त होतीहोय तो दूसरेदिन सूर्यास्तपीछें प्रतिपदामे ही होरी प्रगटनी अथवा भद्रा बेठेपिछें पांच घडीतांई भद्राको मुख ताको त्याग करिकें बाकीभद्रामें ही प्रगटनी अथवा भद्राकी तीन घडी छेली सो भद्राको पुछ तामे होरी प्रगटें तो हू चिंता नही ओर वा दिन ग्रहण होय ओर ग्रस्तोदय होय तो ग्रहण छूटे पीछें होरी प्रगटनी ओर ग्रस्तोदय न होय तो ग्रहण लगे पेहलें होरी प्रगटनी परंतु कब हू होरी दिनमें प्रगटनी नहि रात्रीमें ही प्रगटनी ओर जा रात्रिमें होरी प्रकटीजाय तासूं पहिलेंदिनमें होरीको उत्सव माननो ॥ २२ ॥ **अथदोलोत्सवनिर्णयः** ॥ फाल्गुन शुद्ध पौर्णिमाके दिन अथवा उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र जा दिन होय ता दिना दोलोत्सव माननो सो उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र पीछलीपेहेररातसूं लेकें सूर्योदय होय ताहांतांई चाहे तब आयो चहिये केवल उदयात नक्षत्रको आग्रह नही ओर पौर्णिमापेहेली उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र आवतो होय तो शुद्धपौर्णिमाके दिन दोलोत्सव माननो ओर दो पून्यो होंय तो पेहेलीपून्योके दिन उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र होय तो वा दिन दोलोत्सव करनो ओर दूसरी पौर्णिमाके दिन उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र होय तो तादिन दोलोत्सव करनो ओर दोई पूर्णिमाके दिन उदयात नक्षत्र होय तो पेहेले दिन दोलोत्सव माननो ओर पौर्णिमाको क्षय होय ओर वा दिन उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र होय तो वा दिन दोलोत्सव करनो ओर पूर्णिमापीछें प्रतिपदाप्रभृ

१ भद्रा सो विष्टी ताको स्वरूप राखीपून्याके निर्णयमे में लिखूंगा

तिमें उत्तराफाल्गुनी आवे तो ता दिन दोलोत्सव माननो ओर सो नक्षत्र दोदिन उदयात होय तो पहिलेदिन उत्सव माननो ओर उत्तराफाल्गुनीनक्षत्रको क्षय होय तो क्षयके ही दिन दोलोत्सव करनो ओर पौर्णिमाके दिन ग्रहण होय ओर उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र दुसरे दिन होय तो पौर्णिमाके दिन दोलोत्सव करनो ग्रहण होय तब नक्षत्रको आग्रह नही ॥२३॥ **अथसंवत्सरारंभनिर्णयः॥** चैत्रशुद्ध प्रतिपदा संवत्सरोत्सव सो प्रतिपदा उदयात लेनी ओर दो प्रतिपदा होंय तो पेहेली प्रतिपदाके दिन उत्सव माननो ओर प्रतिपदाको क्षय होय तो विद्धाप्रतिपदाके दिन उत्सव माननो ओर दो चैत्र होंय तो पेहेलेचैत्रकी शुक्लप्रतिपदाके दिन उत्सव माननो एसो निर्णयसिंध्वादिग्रंथनको आशय हे ओर दूसरेचैत्रकी शुद्धप्रतिपदामें उत्सव माननो एसो समयमयूखप्रभृतिनको अभिप्राय हे तासूं जादेशमें जेसो शिष्टाचार होय तहां तेसो माननो याबावत स्वमार्गीयग्रंथनमें कछु विशेषलेख नहीहे ॥ २४ ॥ **अथरामनवमीनिर्णयः॥** चैत्रशुद्ध नवमी रामनवमी सो नवमी उदयात लेनी ओर दो नवमी होंय तो पेहेलीनवमीके दिन उत्सव माननो ओर नवमीको क्षय होय तो विद्धानवमीके दिन उत्सव माननो ओर दशमीको क्षय होयके व्रतके दूसरे दिन पारणाकेलियें दशमी न रहति होय तो हू विद्धानवमीके दिन उत्सव माननो ॥२५॥ **अथमेषसंक्रांतिनिर्णयः॥** मेषसंक्रांतिको पुण्यकाल संक्रांति जाविरियां बेठे तासूं दशघडी पहिलें ओर दशघडी बेठेपीछें जाननो तामें हू जो जो घडी संक्रांतिके पासकी होय सो सो अधिकी अधिकी पुण्य काल जाननो ओर जो सूर्यास्तभयेपीछें संक्रांति अर्द्धरात्रीसूं पहिलें

बेठती होय तो वादिना मध्यान्हपीछें पुण्यकाल जाननो ओर अर्द्ध रात्रसूं पीछें बेठती होय तो दूसरे दिन मध्यान्हसूं पहिलें दो प्रहर पुण्यकाल जाननो ओर बरोबर मध्यरात्रिकेसमें संक्रांति बेठती होय तो पहिलेदिना मध्यान्हसूं पीछें दो प्रहर पुण्यकाल ओर दूसरेदिन मध्यान्हसूं पहिलें दो प्रहर पुण्यकाल एसें दोउदिना पुण्यकाल बरोबर जादिना सौकर्य होय तादिना माननो ॥२६ ॥ **अथश्रीमदाचार्याणांप्रादुर्भावोत्सवनिर्णयः॥** वैशाखकृष्णएकादशी श्रीमहाप्रभुनको जन्मोत्सव सो एकादशी उदयात लेनी ओर दो एकादशी होंय तो पेहेली एकादशीके दिन उत्सव माननो एकादशीको क्षय होय तो विद्धाएकादशीके दिन उत्सव माननो जा दिन व्रत करनो ताही दिन उत्सव माननो एसो आग्रह नही याही प्रमाणे सातोंबालकनके[1] तथा सब गोस्वामि बालकनके जन्मदिन उत्सवकी सब तिथी लेनी ॥ २७ ॥ **अथअक्षयतृतीयानिर्णयः॥** वैशाख शुद्ध तृतीया अक्षयतृतीया सो तीज उदयात लेनी ओर दो तीज होंय तो पेहेली तीज माननी ओर तीजको क्षय होय तो विद्धातीजके

---

१ अब वैष्णवनकों जानिवेकोलियें सातों बालकनके उत्सव लिखतहूं श्रीगिरिधरजीको उत्सव कार्तिकशुदि द्वादशी, श्रीगोविंदरायजीको उत्सव मार्गशिर वदि अष्टमी, श्रीबालकृष्णजीको उत्सव आश्विन वदि त्रयोदशी, श्रीगोकुलनाथजीको उत्सव मार्गशीर्ष शुदि सप्तमी, श्रीरघुनाथजीको उत्सव कार्तिक शुदि द्वादशी, श्रीयदुनाथजीको उत्सव चैत्र शुदि षष्ठी, श्रीघनश्यामजीको उत्सव मार्गशिर वदि त्रयोदशी, श्रीमहाप्रभुनके ज्येष्ठपुत्र श्रीगोपीनाथजीको उत्सव आश्विन वदि द्वादशी, इनसबजन्मोत्सवनमें तिथि उदयात लेनी ओर वह तिथि दोदिना सूर्योदयसमें होय तो पहिलेदिन उत्सव माननो ओर वातिथिको क्षय होय तो क्षयके दिन ही उत्सव माननो यह निर्णय तो मूलग्रंथमें दिखायो ही हे ओर इनसबउत्सवनमें कछु विशेषनिर्णय नहीहे तासूं ये उत्सव संस्कृतनिर्णयग्रंथनमें हू जुदे लिखे नहीहें ओर मूलपुरुषादिकनमें प्रसिद्ध हू हें ताहीसूं श्रीजीवनजीमहाराजनें या ग्रंथमें जुदेजुदे नहिलिखे.

दिन उत्सव माननो ॥ २८ ॥ **अथनृसिंहचतुर्दशीनिर्णयः ॥**
वैशाखशुद्ध चतुर्दशी नृसिंहचतुर्दशी सो चतुर्दशी उदयात लेनी ओर
दो चतुर्दशी होंय तो पेहेलीचतुर्दशीके दिन उत्सव माननो ओर
चतुर्दशीको क्षय होयतो विद्धाचतुर्दशीके दिन उत्सव माननो ॥ २९ ॥
॥ अथगंगादशहरानिर्णयः ॥ ज्येष्ठशुद्ध दशमी श्रीगंगाजीको
दशहरा सो दशमी उदयात लेनी ओर दो दशमी होंय तो पेहेली
दशमीके दिन उत्सव माननो ओर दशमीको क्षय होय तो विद्धाद
शमीके दिन उत्सव माननो ॥ ३० ॥ **अथज्येष्ठाभिषेकोत्सव
निर्णयः ॥** ज्येष्ठशुद्धपौर्णिमाके दिन अथवा जा दिन सूर्योदयसूं प
हेलेपिछलीरातकूं स्नानसमें ज्येष्ठा नक्षत्र होय ता दिन स्नानयात्राको
उत्सव माननो ॥ सो पून्यो उदयात लेनी ओर ज्येष्ठानक्षत्र पिछलीपे
हेररातसूं लेकें सूर्योदय होय तांहांतांई चाहेतब आयो चहिये ॥ ओर
दोपून्यो होंय तो पेहेली पून्योंके दिन स्नानसमें पिछलीरातकूं ज्येष्ठा
नक्षत्र आवतो होय तो वा दिनें उत्सव माननो ॥ ओर दुसरी पून्योंके
दिन स्नानसमें पिछलीरातकूं ज्येष्ठानक्षत्र आवतो होय तो तादिन
उत्सव माननो ओर दोइ दिन पिछलीरातकूं स्नानसमें ज्येष्ठानक्षत्र
आवतो होय तो पेहेलेदिन उत्सव माननो ओर पून्योको क्षय होय
ओर वा दिन आवती पिछलीरातकूं स्नानसमें ज्येष्ठानक्षत्र आवे तो
वादिन उत्सव माननो ओर पून्योंके दिन ज्येष्ठानक्षत्र न होय तो
जादिन सूर्योदयसूं पहिले स्नानसमें ज्येष्ठानक्षत्र आवे तादिन उत्सव
माननो यामे पूर्णिमाको आग्रह नहि ओर ज्येष्ठानक्षत्रको क्षय होय
तो हू दूसरे दिन स्नानसमे ज्येष्ठानक्षत्र आवतो होय तो ता दिन
उत्सव माननो ओर स्नानसमयसूं पहिलें ही ज्येष्ठानक्षत्र समाप्त

होतोहोय तो केवल पूर्णिमाके दिन उत्सव माननो ओर पुन्योकी आवतीपिछलीरातकूं ज्येष्टानक्षत्र होय ओर ग्रहण होय तो पेहेली पिछलीरातकूं नक्षत्रविना हू केवल पूर्णिमामें स्नान करावनो ॥३१॥ **॥ अथरथोत्सवनिर्णयः ॥** आषाढ शुद्ध प्रतिपदासूं लेकें जा दिन पुष्यनक्षत्र होय ता दिन रथयात्राको उत्सव माननो सो पुष्य नक्षत्र सूर्योदयव्यापी लेनो ओर दोईदिना नक्षत्र सूर्योदयव्यापी होय तो पहिलेदिना रथयात्राको उत्सव माननो ओर नक्षत्रको क्षय होय तो क्षयके दिन हि पुष्यनक्षत्रमें उत्सव करनो अथवा केवल द्विती याके दिन उत्सव माननो ॥ ३२ ॥ **अथषष्ठीपंडगुनिर्णयः ॥** आषाढशुद्धषष्ठी कसूंबाछठ सो छठ उदयात लेनी ओर दो छठ होंय तो पेहेली छठ लेनी ओर छठको क्षय होय तो विद्धाछठ लेनी ॥३३ **॥ अथआषाढशुद्धपौर्णिमानिर्णयः॥** आषाढशुदी पून्यो पर्वात्मक उत्सव सो पून्यो उदयात लेनी दो पून्यो होंय तो पेहेली पून्यो लेनी ओर पून्योंको क्षय होय तो विद्धापून्यो लेनी ॥३४ **॥ अथहिंदोलांदोलनारंभनिर्णयः ॥** श्रावणकृष्ण प्रतिपदासूं लेकें जा दिन दिनशुद्धी होय श्रीठाकूरजीकी वृषराशीकूं अनकूल चंद्र होय ता दिनसूं श्रीठाकुरजीकूं हिंडोरा झुलावने॥३५॥ **॥ अथश्रावणशुक्लतृतीयानिर्णयः ॥** श्रावणसुदि तिज ठकुरा नीतीज सो तीज उदयात लेनी ओर दो तीज होंय तो पेहेली तिज लेनी ओर तिजको क्षय होय तो विद्धा तीज माननी ॥ ३६ ॥ **॥ अथनागपंचमीनिर्णयः ॥** श्रावणशुद्ध पंचमी नागपंचमी सो पंचमी उदयात लेनी ओर दो पंचमी होंय तो पेहेली लेनी ओर क्षय होय तो विद्धा लेनी ॥ ३७ **॥ अथपवित्रैकाद**

शीनिर्णयः ॥ श्रावणशुद्ध एकादशी पवित्राएकादशी सो जा दिन व्रत करनो ता दिन भद्रारहितसमेंमें श्रीठाकुरजीकूं पवित्रा धरावने व्रतको प्रकार प्रथम एकादशीनिर्णयमें लिख्योहे ॥ ३८ ॥ **अथरक्षाबंधननिर्णय. ॥** श्रावण शुदी पून्यो राखीपून्यो सो पून्यो राखी धरे तासमें भद्रारहित चहिये ओर सवेरें तथा सांझकूं भद्रारहितपूर्णिमा मिले तो सांझकूं रक्षा धरावनी ॥ ३९ ॥ **अथहिंदोलांदोलनविजयनिर्णयः ॥** श्रावण सुदी पून्योसूं लेकें ओर तीजतांई जा दिन दिनशुद्धि होय श्रीठाकुरजीकी वृषराशिकूं अनुकूल चंद्र होय शनैश्चर वार वुधवार न होय ता दिन हिंडोराविजय करनो ओर कछू अडबडाट होय तो जन्माष्टमीतांई हू हिंडोरा झूलें ओर पवित्रा हू तहातांई धरे एसो सदाचार हे ॥ ४० ॥ इति श्रीवल्लभाचार्यपादांवुजषडंघ्रिणा ॥ जीवनेनकृतःसम्यक्निर्णयोव्रजभा

---

१ भद्राको स्वरूप प्रबोधिनीके निर्णयमें लिख्योहे विशेष रक्षानिर्णयमें लिखूंगो.

२ भद्राको स्वरूप ज्योतिःशास्त्रमें कह्योहे राकाष्टमीप्राग्दलेविट्प्रांत्यकृतरुद्रयोरवहुले कृष्णेनिरेकेष्विह याको तात्पर्यार्थ कृष्णपक्षमें तृतीयाके ओर दशमीके दूसरे आधेभागमें भद्रा रहे ओर सप्तमीके ओर चतुर्दशीके पहिलेआधेभागमें भद्रा होय ओर शुक्लपक्षमें चतुर्थीके ओर एकादशीके दूसरेआधेभागमें भद्रा होय ओर अष्टमीके तथा पूर्णिमाके पहिलेआधेभागमें भद्रा होय जसें चतुर्दशीकी समाप्तिभयेसूं लेकें प्रतिपत्के आरंभतांई छप्पनघडी पून्योहोय तो पहिलीअट्ठाईसघडी भद्रा जाननी ये भद्रा पंचांगमें हू स्फुट लिखीहोयहे होरीके निर्णयमें हू याहीप्रमाणें भद्रा जाननी.

३ जन्माष्टमीतांइ पवित्रा धरिसकें एसो सदाचार हे ओर कछु बडे अडबडाटसूं जन्माष्टमीतांइ हू न बनिसके तो प्रबोधिनीतांई हू पवित्रा धरायवेको काल ग्रंथनमें लिख्योहे परंतु वैष्णवकें सर्वथा पवित्रा धरायेविना रहनो नहि क्यों जो पवित्रा धराये विना आखवर्षकी सेवा निष्फल होतहे.

४ अब यारीतसों सबउत्सवनको निर्णय करिकें गोस्वामिश्रीजीवनजीमहाराज या ग्रंथकी संपूर्णता एकश्लोकमें दिखावतहें ताश्लोकको अर्थ श्रीमहाप्रभुनके चरणरूपकमलके भ्रमर इतनें जैसें भ्रमर कमलमें अत्यंत आसक्त होतहे तैसें श्रीमहाप्रभुनके

षया ॥ १ ॥ उत्सवानांकल्पलतांप्रतानंनिर्णयांस्तथा ॥ आलोक्याथ विचार्यापिप्रयत्नेनयथामति ॥ २ ॥ भगवत्सेवकानांचतदज्ञानवतांसदा ॥ सौकर्यायहिसेवायांप्रयत्नोयंमयाकृतः ॥ ३ ॥ यद्यशुद्धंभवेत्किंचित्पौनरुक्त्यंभ्रमात्तदा ॥ क्षंतव्यंविबुधैर्यत्तेगुणानांग्रहयालवः ॥ ४ ॥

चरणारविंदमें अत्यंत आसक्त एसे जे श्रीजीवनजीमहाराज तिननें आछीरीतसों यह निर्णय व्रजभाषामें कियो

१ अब सबनकूं विनाश्रम तुरत उत्सवनको ज्ञान होयवेकेलिये यह ग्रंथ भाषामें कियोहे तासूं यामें वचन लिखे नहीहें यातें कोईकूं निर्मूलपनेको संदेह होय ता संदेहको निवारण दूसरेश्लोकमें करतहे ताश्लोकको अर्थ प्राचीन श्लोकबद्ध संवत्सरोत्सव कल्पलता ओर अनेकग्रंथकारश्रीपुरुषोत्तमजीकृतउत्सवप्रतान ओर कल्याणरायजीनिर्णयरांमभटप्रभृतिनके उत्सवनिर्णय इन सब ग्रंथनकूं मेरी बुद्धिप्रमाणे यत्न करिकें देखिकें ओर संपूर्ण विचार करिकें यह ग्रंथ कियोहे यातें या ग्रंथमें जो निर्णय लिख्योहे तामे प्रमाण वचन चहियें तो विन ग्रंथनमे देखने ओर मेरि बुद्धि प्रमाणे यह कियो एसे कह्यो यातें दीनता दिखाइ ओर याश्लोकमे अथशब्द कार्त्स्न्यार्थक हे सो अमरकोशादिकनमे प्रसिद्ध हे ॥ २ ॥

२ अब या ग्रंथको प्रयोजन तीसरेश्लोकमें कहतहे ता श्लोकको अर्थ जे सदा भगवत्सेवा करतहें ओर उत्सव केसें मानने यह ज्ञान जिनकूं नाहि एसे जे वैष्णव हें तिनकूं सर्वदा सेवामें सौकर्य होयवेकेलियें ही इतनें वर्षदिनपर्यंतकी सब सेवा सुखसूं करीजाय याहीकेलियें यह प्रयत्न मेनें कियोहे या श्लोकमें हिशब्दको अवधारण अर्थ हे.

३ अब या मार्गमें दीनता मुख्य साधन हे ओर परिपूर्णविद्वान होतहें ते गर्वरहित सरल होतहें ताहीसूं चोथेश्लोकमें नम्रता दिखावतहें ता श्लोकको अर्थ या ग्रंथमें मेरी भ्रांतिसूं जो कछु अशुद्ध होय ओर जो पुनरुक्ति होय इतनें जो बात एक बिरियां लिखी होय सो ही वृथा दूसरीबिरियां लिखीगई होय तो सो सब सुज्ञपंडितनकें क्षमा करनो क्यों जो वे गुणनके ही ग्रहणकरिवेवारे होतहें ग्रहयालु एसो ग्रहणकरिवेवारेको नाम अमरमे प्रसिद्ध हे ग्रहयालुर्ग्रहीतरि.

चंद्रेंदुग्रहशुभ्रांशुमितेब्देकार्तिकेऽसिते॥ नवम्यामर्कवारेऽयंप्रबंधःपरिपूरितः ॥ ५ ॥ इतिश्रीगोकुलोत्सवात्मजश्रीजीवनाख्येनविरचितोयमुत्सवनिर्णयःसमाप्तिमगमत् ॥

---

१ अब यह ग्रंथ कोनसे संवतमे कोनसे दिना संपूर्णभयो सो पांचमे श्लोकमे लिखतहें ता श्लोकको अर्थ चंद्र सो १ भू सो पृथ्वी १ ग्रह सो ९ शुभ्रांशु सो चंद्र १ यासंख्याके वर्षमे इतनें अंकानांवामतोगतिः या न्यायसूं विक्रमशकानुसारि गुन्नीससें ग्यारह १९११ के वर्षमे कार्तिकमहीनामें असित सो कृष्णपक्षमे नवमी आदित्यवारके दिन यह ग्रंथ संपूर्ण कियो ॥ दोहा ॥ घनश्यामसुतपंचनादिगोवर्द्धनकविचारु ॥ सुच्छमउच्छवलेखकिटिप्पणिरचीविचारु ॥ १ ॥ वसुलोचनग्रहवसुमतीमितसंवत्मेसार ॥ पूर्णभयीयहपौषवदिनवमीदिनभृगुवार ॥ २ ॥ इतिश्रीवल्लभाचार्यमतवर्त्तिनामोक्षगुरुस्वमातामहगोस्वामिश्रीव्रजवल्लभचरणैकतानेनपंचनदिघनश्यामभटात्मजेनपितृलब्धसिद्धेनगोवर्द्धनशीघ्रकविनाविरचितंउत्सवनिर्णयटिप्पणंसंपूर्णं ॥